



## FEMINIST DISCOURSE IN THE ESSAYS OF RAMVRIKSHA BENIPURI

ORCID  
Connecting Research  
and Researchers

<https://orcid.org/0009-0005-8775-2751>

**DR. VASANT PUNJAJI GADE**

Associate Professor and Head of Department  
Nagnath Arts Commerce & Science College,  
Aundha District Hingoli, Maharashtra  
[vasantgade2011@gmail.com](mailto:vasantgade2011@gmail.com)

Received: 10.11.2024

Reviewed :12.11.2024

Accepted: 13.11.2024

### ABSTRACT

Ramvriksha Benipuri is a renowned figure in Hindi literature, celebrated for his unique style, language, and creativity. Known as a "word artist" and "wizard of the pen," his works span various literary forms, including autobiographies, essays, plays, novels, stories, travelogues, and diaries, forming a rich legacy. His masterpiece *Mati Ki Moortiyan* exemplifies his ability to craft literary treasures. Benipuri's writings, deeply influenced by the socio-political transformation of India's colonial era, address pertinent issues, particularly women's empowerment. Observing the plight of women in his native Mithilanchal—home to legendary figures like Sita, Gargi, and Maitrayi—he expressed profound empathy and concern for their deteriorating status over time. His works vividly depict the atrocities faced by women due to societal evils like superstition, communalism, and corruption.

**KEY WORDS:** Hindi Literature, Women Empowerment, Social Reform

### रामवृक्ष बेनीपुरी के निबन्धों में नारी-विमर्श

रामवृक्ष बेनीपुरी यह नाम साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट शैली भाषा और रचनात्मकता के लिए जाना जाता है। यह शब्दों के चितरे और कलम के जादूगर जैसी उपाधियों से विभूषित हिंदी रचना संसार के अप्रतिम रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर जिन विषयों को स्पर्श किया वह साहित्य विधा के अनमोल धरोहर बन गए। 'माटी की मूरतें' से उन्होंने हिंदी साहित्य में सोने की मूरतें गढ़ दी। इसके अलावा इनकी आत्मकथा, चिंतन परक निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानियाँ, यात्रा साहित्य तथा डायरी साहित्य ये सब साहित्य में उनकी कीर्ति के उज्ज्वल स्तंभ समान हैं। साहित्य और अर्थ मीमांसा की दृष्टि से उनका रचना संसार आज की स्त्री से संबंधित विचार विमर्श के लिए बहुत ही प्रासंगिक है। बेनीपुरी जी के जन्म का समय देश में संक्रमण काल था। गुलाम देश की जन आकांक्षाएँ अंगड़ाई ले रही थी। राजनीति, शिक्षा, साहित्य हर क्षेत्र में

परिवर्तन की एक लहर सी उठी हुई थी। एक तरफ राजनीतिक मंच पर युगांतर स्थापित करने वाले नेताओं का उदय हो रहा था तो वहीं साहित्य में, भाषा में, लेखन में सभी वर्जनाओं को रुढ़ियों को तोड़कर नई राह बनाने की पुरजोर कोशिश हो रही थी। वैसी ही परिस्थितियों में आधी आबादी के प्रश्न पर भी विचार होना लाजमी था। लेखकों, साहित्यिकों तथा सुधारकों के लिए यह प्रश्न उनके कार्यक्षेत्र में प्रमुखता से उभर कर सामने आया। ऐसे में बेनीपुरी जी ने भी अपनी रचनाओं में नारी पात्रों के माध्यम से नारी के उत्थान यज्ञ में अपनी आहुति दी। बेनीपुरी जी के मन में नारी के प्रति असीम सहानुभूति और सराहना का भाव था। अपने जन्म क्षेत्र मिथिलांचल में नारियों की दशा को उन्होंने भली-भाँति देखा था। नारियों की स्थितियों परिस्थितियों में कालक्रम में जो गिरावट आती जा रही थी उसे लेकर वे अत्यंत चिंतित थे। मिथिलांचल की समृद्ध धरा जहाँ एक समय में सीता, गार्गी और मैत्रेयी जैसी महान स्त्रियों का अभिर्भाव हुआ।

जहाँ आमपाली जैसी ऐतिहासिक रूप से चर्चित नारियों ने जन्म लिया वहाँ की नारियों की दशा में निश्चय ही बदलाव होना चाहिए इस भाव से सदैव उनकी रचनाशीलता अनुप्राणित रही। रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने अपने विभिन्न स्त्री चरित्र के माध्यम से नारी पर हो रहे तमाम अत्याचारों की विशद झलक दिखलाई है। उन्होंने दिखाया है कि समाज में फैले अंधविश्वास, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि की सर्वाधिक शिकार स्त्रियाँ ही होती हैं। किस प्रकार स्त्रियों को सदैव आलंबन की आवश्यकता होती है। पिता, पति, पुत्र अथवा किसी पुरुष के सहारे ही उनका जीवन यापन होता है जब कभी वह अकेले पड़ती हैं तब किस प्रकार समाज अपने विभत्स रूप में उसके सामने आ जाता है। 'नई नारी' जैसे निबंधों में उन्होंने इन्हीं तमाम विषमताओं को दूर करने का आह्वान करते हुए कहा कि नारियों के प्रति जब तक हम अपनी धारणा में बदलाव नहीं करते तब तक राष्ट्र का विकास संभव नहीं क्योंकि हम उसी देश के रहने वाले लोग हैं जहाँ कहा गया है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। अभिप्राय यह है कि जब तक स्त्रियों की दशा में सुधार नहीं होगा तब तक राष्ट्र वैभवशाली नहीं हो सकता।

रामवृक्ष बेनीपुरी कलम के जादूगर महान स्वतन्त्रता सेनानी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी पत्रकार थे। जिन्होंने अनेक विद्याओं पर अपनी लेखनी चलाई जिनमें निबंध, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, कहानी, उपन्यास जीवनी इत्यादि हैं।

स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण रचनाएँ जेल में ही लिखी इन पर गाँधीवादी प्रभाव भी परिलक्षित होता है। इन्होंने राजनीति में सक्रिय होने के साथ-साथ एक समाज सुधारक की भूमिका का निर्वाह भी उचित प्रकार से किया।

बेनीपुरी जी ने 35 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में संपादन अथवा लेखक के रूप में योगदान दिया, और अपनी लेखनी से जन जागृति फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका

का निर्वाह किया। सामाजिक रूढ़ियों व गलत राजनीतिक कार्यों का विरोध करने के कारण उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा। बेनीपुरी जी के साहित्य की ओर देखते हैं तो उनका साहित्य भारतीय समाजवाद की विशुद्ध कसौटी के रूप में दिखाई देता है। रामवृक्ष बेनीपुरी जी आजादी के पश्चात भी बिहार में सामाजिक आन्दोलनों के जनक रहें। इनके साहित्य में समाजवाद को सच्चा स्वरूप देखने को मिलता है। समाजवाद की परिभाषा में स्पष्ट किया गया है कि जाति, धर्म, वर्ण, लिंग आदि समस्त भेदों के स्वरूप से उठकर मनुष्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का हिमायती है। लिंग भेद के प्रति निराशा पुरुषवादी समाज का काला पहलू दिखाता है।

भारतीय समाज प्रारम्भ से ही पितृसत्तात्मक समाज रहा है समाज की पुरुष सत्ता होने के कारण सामान्य नारी को ही नहीं अपितु शिक्षित व प्रगतिशील नारी को भी पुरुष की सत्ता स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। प्राचीन काल से आज तक के साहित्य, संस्कृति और समाज की नारी संबंधी धारणाएँ पुरुष मानसिकता और दृष्टिकोण से प्रभावित रही हैं, किन्तु नारी मुक्ति आन्दोलन और स्वतन्त्रता आन्दोलन में भारतीय नारियों की अग्रिम भूमिका से साहित्य में नारी के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देने लगा। हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श और नारी मुक्ति को केन्द्र में रखकर बहुत कुछ लिखा गया। साहित्य में 'नारी विमर्श' के अन्तर्गत स्त्री के विषय में स्त्री द्वारा लिखा गया साहित्य ही 'साहित्यिक नारी-विमर्श' माना जाता रहा है और इसके पीछे अनुभव भी प्रमाणिकता को ठोस तर्क रूप प्रस्तुत किया जाता रहा है।

महादेवी वर्मा ने भी कहा "पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है और नारी के लिए अनुभव अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र हम दे सकेंगे, वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सकें।

रामवृक्ष बेनीपुरी ने सन् 1945 में नारी चिंतन का प्रगतिशील दस्तावेज नई नारी नामक निबन्ध संग्रह की रचना की। जहाँ हम रामवृक्ष बेनीपुरी के साहित्य को देखते हैं तो हमें विदित होता है कि इनके निबन्ध स्त्रीवादी दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। जहाँ नारी के प्रति इनकी प्रगतिशील धारणा व नई नारी के माध्यम से आधुनिक नारी की झलक दिखाने का प्रयास किया है। रामवृक्ष बेनीपुरी ने 1949 में प्रकाशित 'नई नारी' पुस्तक के अन्तर्गत इतिहास और पुराणों में वर्णित स्वाध् पीनचेता भारतीय नारियों के चरित्र की व्याख्या द्वारा नैतिकता के पुराने मानदंडों को चुनौती देकर नारियों के प्रति अपने दृष्टिकोण की व्याख्या की तथा नारी विमर्श के जरिए नारी स्वतन्त्रता के यज्ञ में अपनी आहुति दी। 1997 में इंडिया टुडे की साहित्यिक वार्षिकी में स्त्री लेखन पर स्त्रियों के एकाधिकार पर काफी बहस हुई और ध्यातव्य है कि इस बहस में पुरुषों की भागीदारी नहीं थी, तत्पश्चात् यह स्वीकृत हुआ कि लेखन, लेखन होता है, नर या मादा नहीं उसे बांटकर देखने वाली दृष्टि पूर्वाग्रह से ग्रस्त है।"

बेनीपुरी जी ने अपने निबन्धों में इतिहास और पुराणों के स्वाधीनचेत भारतीय स्त्रियों के चरित्रों की व्याख्या द्वारा नैतिकता के पुराने मानदंडों को चुनौती दी है तथा उनका विश्लेषण करते हुए तथाकथित-आदर्शों को नये दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करते हैं। इनके नारी सम्बन्धी निबन्ध संग्रह 'नई नारी' में स्त्री पराधीनता के चित्रण के साथ उसकी समस्या तथा निवारण पर भी विचार किया गया है। नारी की दशा के साथ उसकी दिशा की ओर संकेत किया गया है कि नारी अब चार दिवारों में कैद मर्यादाओं के बंधन में बंधी को कोमललता नहीं। वह अब विद्युतलता बन गई है जो शक्ति का केन्द्र और प्रकाश पुंज बनी आसमान में जगमग कर रही है। 'ब्रह्म समाज' ने नारी को शिक्षा दिलाने के लिए आन्दोलन किया। गांधीजी ने 1913 ई. में सर्वप्रथम दक्षिणी अफ्रिका में स्त्रियों को सार्वजनिक प्रदर्शनों में उतारा था तथा

1921 ई. में हजारों स्त्रियों ने बम्बई में जो प्रदर्शन किया उस वीरांगना रूप से सभी दंग रह गये।.....बेनीपुरी जी ने 'नई नारी' संग्रह में नारी विषयक जो मान्यताएँ स्थापित की थी उसके 72 साल बाद भी नारी शोषितों की श्रेणी में ही गिनी जाती है। गुलामी की जंजीरों से मुक्ति पाने के लिए गलत राहों में भटक रही है। जो नारी स्वयं को किसी के अधीन नहीं रखती। वह भ्रष्टा, पतिता, कलंकिनी कहलाती है और जो चारदिवारों में कैद है वह सती, साध्वी कही जाती है फिर भी स्वतन्त्रता कहीं नहीं। बेनीपुरी कहते हैं "आप स्त्रियों को समानाधिकार दीजिए, फिर यह समस्या आज से आप हल हो जायेगी।

हमेशा स्त्रियों को पुराणों की स्त्री चरित्रों का अनुकरण करने को कहा जाता है परन्तु कोई द्रौपदी का अनुकरण करने को क्यों नहीं कहता, जो जोर जबर्दस्ती पाँच पाण्डवों के साथ बांध दी है, परन्तु इससे वह विचलित नहीं हुई, भाग्य को ललकारकर पाँचों पाण्डवों को एक ही रस्सी में नाथकर जिन्दगी भर नचाती रही। अतः बेनीपुरी जी ने कहा है

"एक की जिन्दगी एक पर निर्भर रहकर रोते कटी (सीता), दूसरी ने अपनी जिन्दगी को पाँच पर न्यौछावर कर मौज उड़ाती रही (द्रौपदी)।"

कुन्ती, द्रौपदी, अहिल्या, मंदोदरी, तारा यह पांच हमारी भारतीय पुराणों के अनुसार सती मानी जाती है जिनके चरित्रों के धब्बे आधुनिक दृष्टि से देखने पर धोए जा सकते हैं, न छिपाए जा सकते हैं। क्या उस समय सतीत्व का कोई मूल्य नहीं था? या सतीत्व की कोई दूसरी ही परिभाषा थी? शायद सवाल यह न था कि आप किस के साथ क्या करती हैं, पर सवाल यह था कि आप क्या हैं और संसार को, मानवता को आपने क्या दान दिया है?

इन सतियों के वीर पुत्रों ने अपनी वीरता, पराक्रम और महानता के रंग से अपनी माताओं के चरित्र के धब्बे को ढक दिया, जैसे शरीर पर हुए घाव को वस्त्र से ढक

दिया जाता है। हमारे इतिहास की ओर एक आदर्श चरित्र है शकुन्तला। जिसके पुत्र 'भरत' के नाम पर हमारे देश का नाम 'भारत' रखा गया है। क्या आज के आधुनिक समाज में जहाँ स्त्री जन्म एक पाप माना जाता है कोई कण्व जैसा पिता मिल सकता है? जो नदी के तट पर पायी गई एक शिशु 'कन्या' को अपनी पुत्री समान पालन-पोषण करे तथा विवाह से पूर्व उसकी गर्भावस्था की बात जान उसे सानन्द स्वीकार करें? अच्छा हुआ उनका जन्म इस आधुनिक समाज में नहीं हुआ। नहीं तो किसी को आत्महत्या करनी पड़ती तो किसी के माथे कुलटा, चरित्रहीन, पतिता का धब्बा लग जाता। यह पुरुष प्रधान समाज है जो नियमों-कायदों को पुरुषों की जरूरत के अनुसार बदलता रहता है।

आज अपने हक की लड़ाई के लिए उन्हें अपने-अपने सामने देखा कोई उन्हें बददिमाग, पागल कहे तो कहे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि आजादी के दीवानों को भी लोग पागल ही कहते थे। धैर्य की बांध अब टूट चुकी है, सांत्वना से अब कुछ नहीं होने वाला, झूठे वादे और भरोसे पर अब इन्हें विश्वास नहीं रहा। मांगने से मिलने वाली यह स्वाधीनता नहीं। न भारत को मिली थी न स्त्रियों को मिलने वाली है। लड़ना होगा-पुरानी मान्यताओं से झगड़ना होगा-स्त्री विरोधी ताकतों से, कुर्बानियाँ देनी होगी अपने उस भोलेपन की, जिसको सब स्त्रियों की कमजोरी समझ बैठे हैं। औरत को प्रेम की मूरत माना जाता है इसलिए पुरुषों का कहना है कि औरत अपना अधिकार प्रतिरोध कर के नहीं बल्कि प्रेम से पा सकती है। जिन इतिहास ग्रन्थों मिथकों को आधार मानकर वे यह कहते हैं, उसी इतिहास में हम यह भी देखते हैं कि प्रेम संवेदना, सद्भाव से किसको कितना अधिकार मिला। क्या सीता ने कभी विद्रोह किया? राधा ने कभी अपने अधिकार की बात की?

दोहरे व्यक्तित्व का एक चित्र हम राम में भी देख पाते हैं। रावण का वध करने का कारण, राम का

सीता के प्रति प्रेम नहीं बल्कि अपनी वंश-मर्यादा की रक्षा की। अगर प्रेम होता तो एक गर्भवती स्त्री को जंगल में यूँ भटकना न पड़ता और न ही अन्त में धरती माँ का आश्रय लेना पड़ता। परपुरुष द्वारा स्पर्श की गई नारी आदर्श पुरुष कैसे स्वीकार करें।

अब तक स्त्रियों को वहीं मिला जो पुरुषों ने अपनी इच्छा से देना चाहा। इस स्थिति में पुरुष दाता के रूप में स्त्री गृहीता के रूप में हमारे सामने आई। इसका प्रमुख कारण है। औरत के पास अपने आपको संगठित करने के ठोस साधनों का अभाव। यदि कानून औरत को बराबरी को अधिकार दे भी तो समाज, धर्म परम्परा और लोक-व्यवहार उसके आदि आड़े आ जाते हैं। "संस्कृति" मनुष्य के कल्याण के लिए है। जो संस्कृति-मनुष्य के कल्याण को आघात पहुंचाये या तो उस संस्कृति में आमूल परिवर्तन लाया जाए या उसके कूड़े के ढेर में फेंक दिया जाये।"

स्त्री के बिना परिवार और समाज दोनों अधुरा है, फिर भी समाज में इनकी स्थिति दयनीय है। समाज और माता-पिता द्वारा स्त्री को शुरू से आत्मदान की ही शिक्षा दी गई है। स्त्री और पुरुष के बीच कुछ मौलिक आधारभूत भेद स्वाभाविक है परन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि उसे नीच पतिता और भोग्या समझा जाए। स्त्री को हमारे साहित्य ने पुरुष से स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में देखा ही नहीं, जबकि ये साहित्यकार सामाजिक आचरण में सदाचार और प्रेम का संदेश देते हैं। स्त्री-पुरुष के लिए समाज ने अलग-अलग प्रतिमान निर्धारित कर रखे हैं। आज भी समाज में बेटे-बेटियों में फर्क किया जाता है।

इसी प्रकार बेनीपुरी जी ने भी अपने लेखों में लिखा है कि पतिव्रता होना स्त्रियों के सामाजिक और पारिवारिक सम्मान की अनिवार्य शर्त है, चाहे पति कैसा भी हो। तुलसीदास जी ने लिखा है

'वृद्ध रोगवश जड़ धन हीना / अन्ध बहिर क्रोधी अतिहीना।

ऐसे हूँ पतिर किए अपमाना / नारी पाव जमपुर दुःख  
नाना।'

इसलिए समझना कठिन नहीं है कि पति के लिए ऐसा कोई वक्तव्य हमारे मिथकों में क्यों नहीं है? पति जब चाहे पत्नी को छोड़ सकता है, परन्तु पत्नियों को यह छूट नहीं दी जाती। चाहे पुरुष विवाह से पूर्व किसी से शारीरिक संबंध रखे परन्तु परन्तु पत्नी कुमारी सती ही होनी चाहिए। रिश्तों में ईमानदारी दोनों तरफ से होनी चाहिए, यदि पतिव्रता स्त्री समाज में सम्मान के योग्य हो सकती है तो पति के भी पत्नीव्रती होने पर जोर दिया जाना चाहिए। तमाम यातनाओं और अत्याचारों को सहती हुई भी पत्नियाँ अपने पति को छोड़कर नहीं जाती। कहीं आज भी नारी सामाजिक शोषण की प्रतीक है। नारी के प्रति होने वाले अत्याचार को केवल बाहरी रूप बदलता दिखाई पड़ रहा है, उसके पीछे निहित कई मूलभूत कारण और मानसिकता वैसी ही बनी हुई है। यह मान लिया जाता है कि बहुत से क्षेत्र में औरत, पुरुष की तुलना में मानसिक और शारीरिक दोनों तरह कमजोर है। इसी कारण से जन्म से लेकर मृत्यु तक उसे निरन्तर संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष और समझौता एक औरत के जीवन से इस तरह जुड़ गया है जैसे रात के साथ अंधकार। खाने में पहनने में पढ़ाई-लिखाई में, घूमने-फिरने में, प्रेम में जीवन के हर क्षेत्र में उसे समझौता ही करना पड़ता है। सीमोन द वोउवार ने कहा भी है कि "नारी पैदा नहीं होती बना दी जाती है।"

स्त्रियों की पराधीनता का एक बड़ा कारण यह है कि उन्हें उनके श्रम का मूल्य नहीं मिलता। महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में विस्तार से इसकी चर्चा की है और स्त्री-श्रम की महत्ता को स्त्री-स्वतन्त्रता से जोड़कर देखा है। समाज में नारी को आदर्श का रूप तो बना दिया गया तुम सती, सत्य, त्याग, प्रेम सदभाव, संवेदना आदि की मूर्त हो परन्तु उनके अधिकार की बात कभी नहीं की गई। 'स्त्री विमर्श' ने स्त्री को वस्तु से व्यक्ति बनाया'

में रमणिका गुप्ता ने लिखा है कि "पुरुष सता के षड्यन्त्र के तहत ऐसे वक्तव्य, टिप्पणियाँ आदि दिये जाते रहे हैं, ताकि स्त्री में इतनी हीनता बोध पैदा हो जाये कि खुद को अपराधी, पापी, अपवित्र, धरती का बोझ व अवांछित वस्तु मानने लगे, अपने पर तरस खाये और समर्पित हो जाये और अधिकारों की बात भूल जाये।" औरत को गृहलक्ष्मी तो बना दिया गया परन्तु घर में उसकी स्थिति नौकरानी से भी बदतर बनी रही। अनेक ऐसी औरतें हैं जो बेरोजगारी के कारण वेश्यावृत्ति को विवश होती हैं। धार्मिक ग्रंथों में स्त्री का एकमात्र धरोहर सतीत्व को बताया गया है उसी को वे खुलेआम बेचती हैं। अगर उन्हें अपना सामाजिक-आर्थिक अधिकार मिलता तो उन्हें इस तरह अपना शरीर न बेचना पड़ता। घर हो या बाहर उन्हें अपने सतीत्व के लिए अनवरत संघर्ष करना पड़ता है। हमेशा उनके मन में सतीत्व रक्षा का डर रहता है।

स्त्री के पुरुष के समान बनने की प्रक्रिया में सबसे बड़ी बाधा धर्म और जाति ने खड़ी की है। सारे पूजा-पाठ, रीति-रिवाज बंधन, मर्यादा स्त्री के माथे ही थोपा जाता है। अब तक स्त्रियों को वहीं मिला जो पुरुषों ने अपनी इच्छा से देना चाहा। इस स्थिति में पुरुष दाता के रूप में स्त्री गृहीता के रूप में हमारे सामने आई। इसका प्रमुख कारण है। औरत के पास अपने आपको संगठित करने के ठोस साधनों का अभाव। यदि कानून औरत को बराबरी को अधिकार दे भी तो समाज, धर्म परम्परा और लोक-व्यवहार उसके आदि आड़े आ जाते हैं।

स्त्री के बिना परिवार और समाज दोनों अधूरा है, फिर भी समाज में इनकी स्थिति दयनीय है। समाज और माता-पिता द्वारा स्त्री को शुरू से आत्मदान की ही शिक्षा दी गई है। स्त्री और पुरुष के बीच कुछ मौलिक आधारभूत भेद स्वाभाविक है परन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि उसे नीच पतिता और भोग्या समझा जाए। स्त्री को हमारे साहित्य ने पुरुष से स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में देखा ही नहीं, जबकि ये साहित्यकार सामाजिक आचरण में



सदाचार और प्रेम का संदेश देते हैं। स्त्री-पुरुष के लिए समाज ने अलग-अलग प्रतिमान निर्धारित कर रखे हैं। आज भी समाज में बेटे-बेटियों में फर्क किया जाता है। इसलिए समझना कठिन नहीं है कि पति के लिए ऐसा कोई वक्तव्य हमारे मिथकों में क्यों नहीं है? पति जब चाहे पत्नी को छोड़ सकता है, परन्तु पत्नियों को यह छूट नहीं दी जाती। चाहे पुरुष विवाह से पूर्व किसी से शारीरिक संबंध रखे परन्तु पत्नी कुमारी सती ही होनी चाहिए। रिश्तों में ईमानदारी दोनों तरफ से होनी चाहिए, यदि पतिव्रता स्त्री समाज में सम्मान के योग्य हो सकती है तो पति के भी पत्नीव्रती होने पर जोर दिया जाना चाहिए। तमाम यातनाओं और अत्याचारों को सहती हुई भी पत्नियाँ अपने पति को छोड़कर नहीं जाती।

बेनीपुरी साहित्य में नारी अपने संपूर्ण रूप गुण तथा तथा शील के साथ उपस्थित है। नारी जो बाल्य काल से लेकर अपने वृद्धत्व तक समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का जिस निर्वहण और निःस्वार्थ भाव से निर्वहन करती हैं उसका यहाँ बड़ा ही सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन है जो निश्चय ही हिंदी साहित्य में अनुपम और अनूठा है। बेनीपुरी जी के संपूर्ण साहित्य को लेकर अब तक नारी विमर्श पर केंद्रित कोई शोध कार्य संभवतः नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध इस अभाव की पूर्ति की दिशा में एक कोशिश है। बेनीपुरी साहित्य में नारी चरित्रों का चित्रण जिन-जिन रूपों में हुआ है तथा वे जिस

परिस्थितियों का सामना करती हैं। बेनीपुरी जी ने अपने समय के तमाम ज्वलंत मुद्दों तथा विशेषकर स्त्रियों की समस्याओं को अपनी रचनाओं में यथार्थ रूप से को उभारा। नारी विमर्श एवं नारियों की चेतना में जागृति के प्रयास उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्रियों को उनके हर स्तर पर होने वाले संघर्षों में मजबूती से तथा डटकर मुकाबला करने की प्रेरणा प्रदान करने का कार्य किया है। हर अत्याचार के खिलाफ खड़े होने का संबल दिया है। नारी विमर्श को एक नई ऊँचाई तथा नया आयाम दिया है।

#### संदर्भ ग्रंथ:

1. नई नारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. जंजीरे और दीवारें, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
3. पतितों के देश में, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
4. माटी की मुरतें, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
5. अम्बपाली, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
6. रामवृक्ष बेनीपुरी रचना संचयन- साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
7. बेनीपुरी ग्रंथावली -राधाकृष्ण प्रकाशन, पटना
8. हिंदी पत्रकारिता के शिखर पुरुष रामवृक्ष बेनीपुरी- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली